किस-किसका नया साल है?

डॉ. सुशील जोशी

नया साल मुबारक। देखने वाली बात यह है कि दुनिया भर में यह साल किस-किसके नाम को समर्पित है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देखें तो तीन-चार प्रमुख चीज़ों को इस साल 'वर्ष' मनाने के लिए चुना गया है। सबसे पहले तो राष्ट्र संघ के खाद्य व कृषि संगठन ने वर्ष 2008 को अंतर्राष्ट्रीय आलू (जी हां, वही अपना आलू, बटाटा) वर्ष घोषित किया है। दूसरा, इस वर्ष से तीन वर्षीय अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी ग्रह वर्ष भी शुरू होगा। तीसरा इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय मेंढक वर्ष भी घोषित किया गया है। 'मेंढक वर्ष' घोषित करने का काम दुनिया भर के चिड़िया घरों के एक संगठन 'एंफीबियन आर्क' ने किया है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने 2008 को विश्व स्वच्छता वर्ष भी माना है। इसके अलावा राष्ट्र संघ इसे अंतर्राष्ट्रीय भाषा वर्ष के रूप में भी मनाएगा। फिर यूनान चाहता है कि 'फेटा चीज़' को प्रचारित करने के लिए इस साल फेटा वर्ष मनाया जाए। और छोटे-मोटे 'वर्ष' कई सारे मनाए जाएंगे।

आम लोगों की दृष्टि से देखें तो सबसे रोचक तो अंतर्राष्ट्रीय आलू वर्ष नज़र आता है। आलू का वानस्पतिक नाम *सोलेनम ट्यूबरोसा* है और यह *सोलेनम* जीनस का सदस्य है जिसमें बैंगन, टमाटर वगैरह आते हैं। दुनिया की खाद्यान्न फसलों में मक्का, गेहूं और चावल के बाद चौथा नंबर आलू का ही है। वैसे करीब 16वीं सदी तक आलू बहुत प्रचलित नहीं था। सोलहवीं सदी में स्पैनिश लोग इसे युरोप लाए थे और फिर वहां से यह पूरी दुनिया में फैला और इस कदर फैला कि आज यह एक प्रमुख फसल है। आलू की एक विशेषता यह है कि अन्य खाद्यान्न फसलों के विपरीत इसके पौधे का लगभग 85 प्रतिशत भाग खाने योग्य होता है, जबकि अन्य फसलों में मात्र 50 प्रतिशत ही खाने योग्य होता है। इसीलिए कहा जा रहा है कि दुनिया से भुखमरी मिटाने में आलू का अहम योगदान हो सकता है।

दुनिया में आलू की सैकड़ों किस्में पाई जाती हैं। इनमें गहरे नीले रंग के छिल्के वाली युरोपीय किस्म से लेकर हमारे यहां उगाई जाने वाली किस्में भी शामिल हैं। पोषण की दृष्टि से आलू महत्वपूर्ण फसल है। इसमें काफी मात्रा में कार्बोहाइड्रेट के अलावा करीब 2 प्रतिशत अच्छी गुणवत्ता का प्रोटीन भी होता है। इसका प्रति हैक्टर उत्पादन भी अन्य फसलों की तुलना में बेहतर होता है और यह कई कठिन परिस्थितियों में उगाया जा सकता है। फिलहाल करीब 19 करोड़ हैक्टर भूमि में 31.5 करोड़ टन आलू का उत्पादन हो रहा है। भारत में प्रति वर्ष प्रति व्यक्ति आलू की खपत करीब 14 किलोग्राम है। अंतर्राष्ट्रीय आलू वर्ष इस उम्मीद में मनाया जाएगा कि आलू का उत्पादन भी बढ़े और खपत भी। वैसे 1990 के दशक के बाद से विकासशील देशों में आलू का उत्पादन लगातार बढ़ा है।

इसके बाद आम लोगों की दृष्टि से महत्वपूर्ण वर्ष होगा अंतर्राष्ट्रीय स्वच्छता वर्ष। राष्ट्र संघ ने जो सहस्त्राब्दि लक्ष्य तय किए हैं उनमें एक प्रमुख लक्ष्य यह है कि दुनिया के जिन लोगों को सुरक्षित शौच व्यवस्था उपलब्ध नहीं है, वर्ष 2015 तक उनमें से आधों को यह सुविधा उपलब्ध हो जाए। दुनिया भर में ऐसे लोगों की संख्या करीब ढाई अरब है। भारत में, सुलभ इंटरनेशनल के अनुमान के मुताबिक, ऐसे 70 करोड़ लोग हैं जिन्हें घर पर शौचालय उपलब्ध नहीं है। इसके अलावा देश में करीब 1 करोड़ ऐसे शौचालय हैं जिनमें से मल हटाने का काम इंसानों को करना पड़ता है। देश में प्रति वर्ष सात लाख बच्चे स्वच्छता के अभाव में दस्त के शिकार होकर दम तोड़ते हैं। विभिन्न

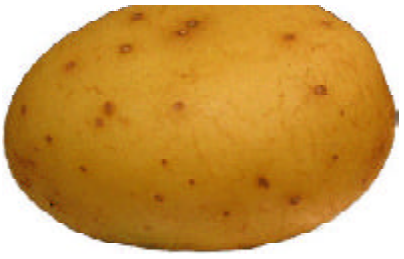

अनुमानों के मुताबिक स्वच्छ शौच व्यवस्था और स्वच्छ पेयजल के अभाव में लाखों लोग मौत के शिकार होते हैं। यह भी माना जाता है कि स्कूलों में शौचालय की अनुपस्थिति के कारण बड़ी लड़कियां स्कूल छोड़ देती हैं। शौचालय की अनुपलब्धता का गंभीर असर महिलाओं व बुज़ुर्गों के स्वास्थ्य पर भी पड़ता है।

आम तौर पर शौच एक ऐसा विषय है जिस पर चर्चा करने से सभी कतराते हैं। शायद इसीलिए शौचालय व स्वच्छता के प्रति आम लोगों में जागरूकता बढ़ाने व नीतिकारों और निर्णयकर्ताओं को कदम उठाने को प्रेरित करने के उद्देश्य से ही 2008 को अंतर्राष्ट्रीय स्वच्छता वर्ष घोषित किया गया है। उम्मीद करें कि यह वर्ष आने वाले वर्षों में बेहतर स्वास्थ्य का आगाज़ करेगा।

इसके बाद आते हैं अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी ग्रह वर्ष पर जो वास्तव में अगले तीन वर्षों तक मनाया जाएगा। इसे यूनेस्को ने घोषित किया है। इसके मूल में संसाधनों के टिकाऊ इस्तेमाल तथा संतुलित विकास के सरोकार हैं। इसके अंतर्गत पृथ्वी को और गहराई से समझने के लिए शोध परियोजनाएं शुरू की जाएंगी और आम लोगों के बीच जागरूकता पैदा करने के प्रयास किए जाएंगे। वर्ष के अंतर्गत मुख्यतः भूजल, प्राकृतिक आपदाओं, सुरक्षित पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन में गैर-मानवीय कारक, संसाधनों के मुद्दों, भूगर्भ की खोजबीन, समुद्रों की संरचना, मिट्टी, जैव विविधता वगैरह पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। इस रूप में देखें तो यह अपेक्षाकृत अकादमिक कवायद होगी हालांकि इसमें संबोधित मुद्दों का सम्बंध दैनिक जीवन से है।

फिर आता है मेंढक वर्ष। जैसा कि ऊपर बताया गया, यह वर्ष मनाने का फैसला एम्फीबियन आर्क नामक अभियान ने लिया है। इस वर्ष के माध्यम से हमारा ध्यान दुनिया के उभयचरों पर छाए संकट की ओर खींचने का प्रयास होगा। उभयचर वे जंतु हैं जो ज़मीन व पानी में रह सकते हैं। इनमें मेंढक भी आते हैं। दुनिया में अब तक उभयचरों की 6000 प्रजातियों को पहचाना गया है। आर्क के मुताबिक इनमें से 50 प्रतिशत खतरे में हैं। उभयचरों को बचाने की इस मुहिम के पीछे एक प्रमुख तर्क यह है कि उभयचर जंतु न सिर्फ हमें तमाम किस्म की औषधियां प्रदान करते हैं, बल्कि ये प्रजातियां सूचक का भी काम करती हैं। किसी स्थान या इकोसिस्टम में प्रदूषण का असर सबसे पहले उभयचरों पर पड़ता है। उभयचरों की हालत देखकर हम बता सकते हैं कि उस इकोसिस्टम की सेहत कैसी है। तो 2008 में दुनिया भर के चिड़ियाघर लोगों में उभयचरों के प्रति जागरूकता व संवेदनशीलता पैदा करने के अलावा नीतिकारों से आग्रह करेंगे कि वे उभयचर संरक्षण हेतु ज़्यादा धन उपलब्ध कराएं। यहां गौरतलब बात यह है कि पिछले वर्षों में मेंढकों की कुछ नई प्रजातियां खोजी गई हैं।

देखा जाए तो अंतर्राष्ट्रीय स्वच्छता वर्ष, आलू वर्ष और पृथ्वी ग्रह वर्ष दरअसल उन लक्ष्यों की पूर्ति की दिशा में उठाए गए कदम हैं जिन्हें दुनिया के राष्ट्रों ने सहस्त्राब्दि लक्ष्य के रूप में निर्धारित किया है। दूसरी ओर मेंढक वर्ष का सम्बंध पर्यावरण व वन्य जीवन के प्रति हमारे सरोकार को ज़्यादा व्यापक रूप देने का प्रयास कहा जा सकता है। इनकी तुलना में अंतर्राष्ट्रीय भाषा वर्ष या चीज़ वर्ष काफी सीमित दायरे के प्रयास हैं। जैसे राष्ट्र संघ द्वारा घोषित भाषा वर्ष का मकसद मात्र इतना लगता है कि राष्ट्र संघ में उसकी अपनी अधिकारिक भाषाओं (अरबी, चीनी, अंग्रेज़ी, फ्रांसिसी, रूसी और स्पैनिश) का उपयोग एक समान रूप से हो। इसी प्रकार से फेटा चीज़ वर्ष मनाने के पीछे चाहत यह है कि दुनिया जान जाए कि इस चीज़ का आविष्कार यूनान में हुआ था और यह बहुत अच्छी होती है।

तो इस वर्ष हम कई 'वर्ष' मनाएंगे और उम्मीद की जानी चाहिए कि वर्ष के साथ इन प्रयासों का अंत नहीं होगा, बल्कि तेज़ी आएगी। अन्यथा हम कई वर्षों से तमाम 'वर्ष' मनाते चले आ रहे हैं और नौ दिन चले अढाई कोस की स्थिति में हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***